श्री सिद्ध क्षेत्र महावीर तपोभूमि

इन्दौर रोड, उज्जैन (मध्यप्रदेश)

उज्जयिनी (उज्जैन) की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि :-

उज्जयिनी एक ऐतिहासिक, पौराणिक व अति प्राचीन नगरी है। वर्तमान में यह नगरी उज्जैन के नाम से सारी दुनिया में विख्यात है। पुण्य सलिला शिप्रा नदी के तट पर बसा यह नगर भारत-वसुन्धरा में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। प्रतिवर्ष यहां लाखों देशी-विदेशी यात्री/पर्यटक, दर्शन-वन्दन-स्नान और परिभ्रमण के लिए आते हैं। जैन संस्कृति से भी उज्जयिनी का गहरा सम्बंध है। ऐसा लगता है जैसे जैन बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण ही इस नगर का नाम उज्जयिनी या उज्जैन पड़ा है। प्रथमानुयोग के जैन ग्रंथों में उज्जयिनी का उल्लेख विशेष रूप से जगह-जगह वर्णित है।

भगवज्जिनसेनाचार्य कृत 'आदिपुराण' के अनुसार भगवान ऋषभदेव ने भारत को 52 जनपदों में विभाजित किया था, उनमें एक अवंती जनपद भी था। प्राचीन काल में अवंती की राजधानी उज्जयिनी थी। ईसा की सातवीं-आठवीं शताब्दी में अवन्ती का नाम मालवा हो गया।

उज्जयिनी और भगवान महावीर :-

आचार्य गुणभद्र स्वामी ने उत्तर पुराण में लिखा है कि दीक्षा ग्रहण करने के बाद भगवान श्री महावीर स्वामी मुनि अवस्था में विहार करते हुए उज्जयिनी आये और यहां के अति मुक्तक श्मशान में आतापन योग धारण करके ध्यानस्थ हो गये। इसी श्मशान में रहने वाले स्थाणु रूद्र नामक दैत्य ने रात्रिकाल में तीर्थंकर मुनि महावीर स्वामी पर घोर उपसर्ग किया। तरह-तरह की यातनायें दी; परन्तु धीर-वीर-गंभीर मुनि महावीर की तपस्या को वह भंग न कर सका। अत: अन्त में पराजय स्वीकार कर उसने क्षमायाचना की। फिर भक्ति-भाव से प्रभु की स्तुति कर यथा स्थान चला गया। भगवान महावीर स्वामी के इसी तप-तेज को चिर-स्थायी बनाये रखने के लिये परम पूज्य मुनि श्री प्रज्ञासागरजी महाराज की प्रेरणा से श्री महावीर तपोभूमि का निर्माण किया गया है।

उज्जयिनी और अभयघोष मुनिराज :-

जैन इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान पं. श्री बलभद्र जैन ने "भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ" नामक ग्रंथ का लेखन संपादन कर जैन इतिहास को जीवन्त कर दिया है। उन्होंने मध्यप्रदेश के तीर्थों में उज्जयिनी का प्रामाणिक इतिहास लिखकर यह सिद्ध कर दिया है, कि उज्जयिनी भगवान महावीर स्वामी की तपोभूमि ही नहीं, अभयघोष मुनिराज की निर्वाण भूमि भी है। कहानी इस प्रकार है —

काकन्दी का राजा अभयघोष एक कछुए के चारों पैर बांधकर और लाठी में लटकाकर नगर में लाया। फिर तलवार के एक ही प्रहार से उसके चारों पैर काट डाले। कछुआ अत्यन्त वेदना पाकर उसी रात में मर गया और वह राजा का पुत्र चण्डवेग हुआ। एक दिन राजा के मन में चन्द्रग्रहण देखकर वैराग्य उत्पन्न हो गया और उसने मुनि दीक्षा ले ली।

एक बार मुनि अभयघोष विहार करते हुए उज्जयिनी पधारे और वीरासन से ध्यान मग्न हो गये। तभी उनका पुत्र चण्डवेग उज्जयिनी आया। पूर्व जन्म के वैर के कारण उसे ऐसी दुर्बुद्धि जागृत हुई कि वह मुनिराज पर उपसर्ग करने लगा और उनके चारों हाथ-पैर काट दिये। मुनिराज इस उपसर्ग को समभाव से सहकर आत्म-स्वरूप में लीन रहे। कुछ ही क्षणों में उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हो गया और तभी मोक्ष भी हो गया। मुनि अभयघोष के निर्वाण प्राप्ति के कारण उज्जयिनी सिद्ध क्षेत्र भी है। इसी कारण परम पूज्य मुनि श्री प्रज्ञासागरजी महाराज ने इस तीर्थ को सिद्ध क्षेत्र कहकर पुकारा है।

उज्जयिनी और सुकुमाल मुनिराज :-

सुकुमाल उज्जयिनी के सेठ सुरेन्द्रदत्त और सेठानी यशोभद्रा के पुत्र थे। पिता के दीक्षा लेने के बाद यौवन अवस्था में सुकुमाल का विवाह उनकी मां ने बत्तीस कन्याओं के साथ कराया था। मुनिराज की भविष्यवाणी थी कि जिस दिन आपको मुनि दर्शन या उनके वचनों का श्रवण होगा। उसी दिन वैराग्य हो जायेगा। ऐसा ही हुआ। सुकुमाल कुमार मुनि के दर्शन कर दीक्षित हो गये। दीक्षा ग्रहण कर वे ध्यानमग्न हो गये। तभी एक स्यालनी अपने चार बच्चों के साथ वहां से निकली। पूर्व जन्म का वैर स्मरण होते ही उसने मुनिराज के पैरों को खाना प्रारम्भ कर दिया। वह तीन दिन तक मुनिराज को खाती रही। शान्त भाव से उपसर्गों को सहन कर मुनिराज आयु पूर्ण होने पर अच्युत स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुए। अत: उज्जयिनी सुकुमाल मुनि की जन्म, दीक्षा व समाधि स्थली भी है।

इस नगरी की ऐतिहासिकता में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, नारायण श्रीकृष्ण, कोटिभट्ट श्रीपाल, महामुनि अकंपनाचार्य, अंतिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु, श्री कुमुदचन्द्राचार्य, महासती मैना सुन्दरी, और मनोरमा के नाम प्रमुखता से जुड़े हुए हैं। जिसका विस्तृत वर्णन शास्त्रों में उल्लिखित है। विस्तार से जानने के इच्छुक पाठकगण भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ और उज्जयिनी का इतिहास आदि जैन साहित्य का अध्ययन करें।

श्री महावीर तपोभूमि की प्रासंगिता :-

परम पूज्य युवा संत मुनि श्री प्रज्ञासागरजी महाराज, श्री दिगम्बर जैन तीर्थ पुष्पगिरी, सोनकच्छ, जिला-देवास (मध्यप्रदेश) से विहार कर जब उज्जैन आये। तो उन्होंने उज्जयिनी के इतिहास की विस्तृत जानकारी ली। मुनिश्री को ज्ञात हुआ कि उज्जयिनी ऐतिहासिक नगरी ही नहीं, तपोभूमि, पुण्यभूमि, निर्वाणभूमि, सिद्धभूमि भी है। यह जानकर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई तो इस बात का दु:ख भी हुआ कि सात सौ से भी अधिक दिगम्बर जैन परिवारों के इस नगर में सोलह जिनालय तो हैं; परन्तु दिगम्बर जैन समाज के पास इस नगरी में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिस पर गर्व किया जा सके। अत: मुनिश्री ने प्रेरणा दी कि इस ऐतिहासिक नगरी में कोई ऐसा ऐतिहासिक कार्य होना चाहिए; ताकि आने वाली पीढ़ी उज्जयिनी को भगवान श्री महावीर स्वामी की तपोभूमि के नाम से जान सके। मुनिश्री के विचारों से प्रभावित होकर दिगम्बर जैन समाज ने उसी क्षण एक तीर्थ बनाने का संकल्प किया। जिसका नाम मुनिश्री ने "श्री महावीर तपोभूमि" दिया।

कहां निर्मित हो श्री महावीर तपोभूमि ?

श्री महावीर तपोभूमि बनाने का संकल्प करते ही यह प्रश्न खड़ा हुआ कि तपोभूमि का निर्माण कहां किया जाये ? वैसे तो उज्जयिनी का कण-कण पवित्र व पावन है। यहां की सम्पूर्ण भूमि पुण्यभूमि, तपोभूमि, सिद्धभूमि है, फिर भी नगर के चारों ओर उत्साही कार्यकर्ताओं ने तीर्थ निर्माण के उद्देश्य से भूमि देखी। अन्त में मुनिश्री के आशीर्वाद से इन्दौर रोड पर उज्जैन से 10 किलोमीटर दूर सात बीघा जमीन क्रय कर ली गयी। तत्पश्चात् मुनिश्री के ससंघ सान्निध्य में 17 नवम्बर, 2005 को श्री महावीर तपोभूमि का भूमि पूजन व शिलान्यास हजारों लोगों की उपस्थिति में सानन्द सम्पन्न हुआ। शिलान्यास के सात महिने बाद 12 जून, 2006 से तीर्थ निर्माण का कार्य द्रुतगति से प्रारम्भ हुआ और सात महिने में सात मन्दिर गुरु भक्तों के अनन्य सहयोग से बनकर तैयार हो गये। जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 21 जनवरी, 2007 से 29 जनवरी, 2007 तक विशाल स्तर पर हजारों लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। सात महिने में मंदिर निर्माण और पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एक विश्व कीर्तिमान है।

क्या निर्मित हुआ श्री महावीर तपोभूमि में :-

(1) भगवान श्री महावीर स्वामी का शिखरयुक्त एक विशाल जिनालय, जिसमें लाल पाषाण की कमलासन सहित 21 फुट ऊंची प्रतिमा विराजित की गई है।

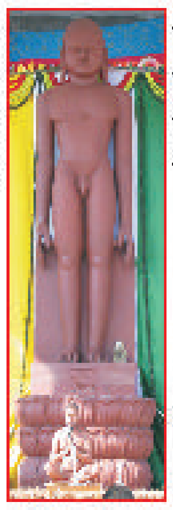

इस प्रतिमा की दायीं ओर लाल पाषाण की 5 फिट ऊंची पद्मासन श्री आदिनाथ भगवान की अति मनोहर प्रतिमा विराजित है, तो बाईं ओर श्यामवर्णी 5 फिट ऊंची श्री पार्श्वनाथ भगवान की सहस्रफणी मनोहारी प्रतिमा विराजमान है इसी मंदिर के तलघर में चौबीसी की स्थापना होनी है, अभी तलघर में लाल पाषाण से निर्मित श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ यंत्र 6X6 फिट की स्थापना की गई है। इसकी आराधना से रोग, शोक, दु:ख, दारिद्र दूर होता है।

(2) शनिग्रह अरिष्ट निवारक मंदिर— मुख्य मंदिर के दायीं ओर यह मंदिर बनाया गया है, जिसमें श्यामवर्णी अष्ट प्रातिहार्य युक्त श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की सातिशय प्रतिमा विराजित है। प्रत्येक शनिवार को यहां विशेष अनुष्ठान होते हैं।

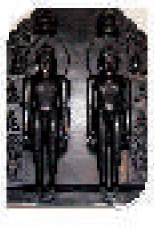

(3) काल सर्प योग निवारक मंदिर— मुख्य मंदिर के बाईं ओर यह मंदिर बनाया गया है। इस मंदिर में श्यामवर्णी श्री नेमिनाथ-पार्श्वनाथ भगवान की संयुक्त प्रतिमा विराजित है। यह विश्व की पहली प्रतिमा व मंदिर है। यहां अमावस्या को विशेष विधि-विधान करने से कालसर्प योग का निवारण होता है।

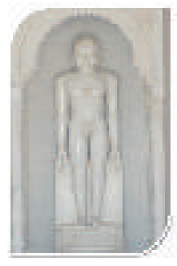

(4) अभयघोष मुनिराज का मंदिर– श्री मुनिसुव्रतनाथ मंदिर के सामने यह मंदिर बना है। इस मंदिर में अभयघोष मुनिराज की श्वेत पाषाणमयी प्रतिमा व चरण चिह्न विराजित हैं। श्री अभयघोष मुनि यहां से मोक्ष पधारे हैं। इसी कारण तपोभूमि सिद्धक्षेत्र है। यहां शरद पूर्णिमा के दिन निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता है।

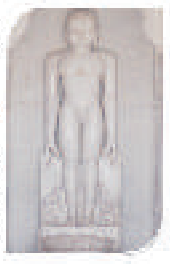

(5) श्री सुकुमाल मुनिराज का मंदिर— काल सर्प योग निवारक मंदिर के सामने यह मंदिर बनाया गया है। इस मंदिर में सुकुमाल मुनिराज की श्वेतवर्णी प्रतिमा व चरण चिह्न विराजित हैं।

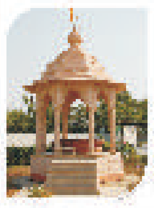

(6) विश्व के सबसे बड़े चरण चिह्न— तपोभूमि में प्रवेश करते ही एक खूबसूरत गुलाबी पाषाण की शिल्प कलायुक्त छतरी बनाई गई है। जिसमें अवंति जनपद के संस्थापक भगवान श्री ऋषभदेव के विश्व में सबसे बड़े (7X7 फीट) चरण चिह्न विराजित किये गये हैं।

(7) विश्व की प्रथम विशाल रत्नों की चौबीसी— चौबीसी तो बहुत हैं; परन्तु तपोभूमि में विराजित रत्नों की चौबीसी का क्या कहना ? एक बार देखो- देखते ही रह जाओ। इसके अलावा एक प्राचीन अस्थायी चैत्यालय भी है, जिसे मुनिश्री ने लघु पंचकल्याणक कर दर्शन हेतु स्थापित किया था।

सुविधायें

धर्मशाला— सर्व सुविधा युक्त सुव्यवस्थित धर्मशाला है। बिजली-पानी-फोन आदि की चौबीसों घंटे सुविधा उपलब्ध है।

भोजनशाला— ट्रस्ट द्वारा यात्रियों के लिए शुद्ध-सात्विक भोजन की सशुल्क व्यवस्था है।

आहार कक्ष— साधु-संतों, त्यागी-वृतियों की आहार व्यवस्था सुचारू रूप से आगमानुकूल हो सके; इस हेतु हवा-प्रकाश युक्त एक आहार कक्ष भी बनाया गया है।

योजनायें

संत निवास— श्री महावीर तपोभूमि इन्दौर-उज्जैन राज्य मार्ग पर स्थित है। अत: विहार काल में सतत साधु-संतों का आवागमन यहां पर होता रहता है। इसलिए साधु-संतों की साधनानुकूल एक संत निवास बनाया जायेगा। साध्वि निवास संत निवास से पृथक् बनाया जायेगा।

सभागृह— साधु-संतों के प्रवचन/सामाजिक मिटिंग आदि के लिए एक विशाल सभागृह बनाने की योजना है।

गुरु प्रसाद शाला— एक सुन्दर 'आचार्य पुष्पदंतसागर गुरु प्रसाद शाला' भी बनाई जायेगी; ताकि यात्रियों को घर के बाहर भी घर जैसा भोजन मिल सके।

कार्यालय— एक सर्व सुविधायुक्त प्रतिक्षालय सहित वातानुकूलित कार्यालय बनाया जायेगा। यहां से तीर्थ की समस्त गतिविधियों का संचालन होगा।

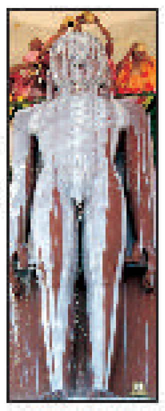

आकर्षण— विशाल चरण, रत्नों की चौबीसी, कलिकुण्ड यंत्र एवं श्री महावीर उद्यान।

विशेष— तपोभूमि में प्रतिवर्ष 26 जनवरी को भगवान श्री महावीर स्वामी का महामस्तकाभिषेक होता है।

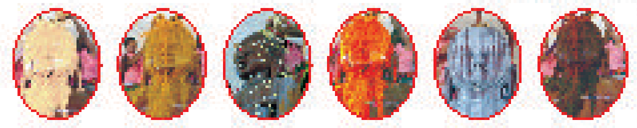

तपोभूमि के विकास हेतु समर्पण सहयोग

1	मुख्य द्वार	लागत राशि
2	कमरा (अटैच)	1,11000/- मात्र
3	कमरा	71,000/- मात्र
4	हॉल (बड़ा)	5,11,000/- मात्र
5	हॉल (छोटा)	2,11,000/- मात्र
6	भोजनशाला स्थाई सदस्य	11,000/- मात्र
7	आहार स्थाई फण्ड	7,101/- मात्र
8	तपोभूमि स्थाई सदस्य	5,101/- मात्र
9	स्थाई पूजन फण्ड	11,00/- मात्र
10	अखण्ड ज्योत फण्ड	501/- मात्र

सबसे कम समय में निर्मित इस तीर्थ के दर्शन वन्दन हेतु आप सादर आमंत्रित हैं। तपोभूमि, उज्जैन रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 10 कि.मी. दूर इन्दौर-उज्जैन मुख्य मार्ग पर स्थित है।

श्री महावीर तपोभूमि के विकास हेतु तन-मन-धन से सहयोग करें। किसी भी प्रकार की सहयोग राशि "श्री महावीर तपोभूमि ट्रस्ट, उज्जैन" के नाम से ड्राफ्ट बनाकर डाक द्वारा भी आप भेज सकते हैं।

आप सपरिवार श्री महावीर तपोभूमि आयें, तीर्थ के दर्शन करें और हमें सेवा का अवसर दें।

卐 श्री महावीराय नम: 卐

पुष्पगिरी प्रणेता प.पू. आचार्य 108 श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज के सुयोग्य शिष्य

तपोभूमि प्रणेता युवा संत मुनि 108 श्री प्रज्ञासागरजी महाराज

की मंगल प्रेरणा से निर्मित तीर्थ

श्री सिद्धक्षेत्र महावीर तपोभूमि

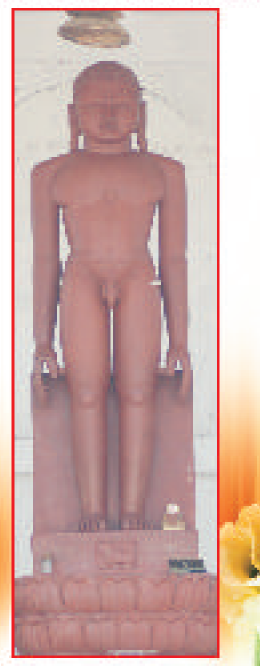

आशीर्वाद — प्रेरणा स्रोत

प.पू. आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज — प.पू. मुनि श्री प्रज्ञासागरजी महाराज